International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 09-12-2020; Accepted: 24-12-2020; Published: 22-01-2021
www.educationjournal.in
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 27-29

अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

रज़िया सुल्तान[1], राधा दुआ[2], अजय कुमार[3]

[1] एम0 एड0 विद्यार्थी, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] प्रोफेसर, शिक्षाविभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
[3] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाविभाग, ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
मानव के बाहय स्वरूप एवं उसमें अन्तर्निहित गुणों तथा शक्तियों के सम्मिलित रूप को व्यक्तित्व कहते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में अल्पसंख्यक संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को जानने हेतु अध्ययन किया गया है। इसके लिए डा0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित मानकीकृत ''व्यक्तित्व मापनी'' को शोध उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में बरेली जिले की बहेड़ी तहसील के मुस्लिम मदरसों में पढ़ने वाले कक्षा 10 के विद्यार्थियों को चुना गया। सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा प्रतिशत के आधार पर किया गया। शोध उपकरण की विभिन्न विमाओं के आधार पर यह पाया गया कि विद्यार्थियों के सकारात्मक पक्षों का प्रतिशत कम रहा तथा नकारात्मक पक्षों एवं औसत स्तर का प्रतिशत अधिक रहा। शोधार्थी का मानना है कि इसका मुख्य कारण अल्पसंख्यक संस्थानों का सीमित एवं संकुचित वातावरण है।

मूल शब्दः सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, व्यक्तित्व मापनी, संकुचित वातावरण

प्रस्तावना
शिक्षा में व्यक्तित्व शब्द को एक विशेष स्थान दिया जाता है। यह अपने में जटिलता धारण किये हुये है। व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के Personality का हिन्दी रूपान्तरण है जो लैटिन भाषा के Persona शब्द से बना है। Persona का अर्थ नकाब या मुखौटा से होता है। जिसे नायक नायिका Play करते समय अभिनेता भी ऐसे मुखौटे पहना करते थे और उन्हें ही परसोना कहा जाता था यही परसोना शब्द बदलते बदलते Personality बन गया। अन्य शब्दों में व्यक्तित्व का तात्पर्य है वह जो दूसरे को दिखायी देता है। मानव का वाह्य स्वरूप और उसमें अन्तर्निहित गुणों तथा शक्तियों के सम्मिलित रूप का नाम ही व्यक्तित्व है। इसमें व्यक्ति के पास शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक रूप से जो कुछ भी होता है वह सभी सम्मिलित होता है। अल्पसंख्यक शब्द संस्कृत के दो शब्दों अल्प यानि थोड़ा एवं संख्या से मिलकर बना है, इस सामासिक शब्द का अर्थ होता है। दूसरे समूहों की तुलना में कम संख्या में होना। दरअसल अल्पसंख्यक उस समुदाय को माना जाता है जिसे अल्पसंख्यक कानून के तहत केन्द्र की सरकार अधिसूचित करती है। भारत में मुस्लिम, सिख, बौद्ध, ईसाई, पारसी और जैन समुदाय को अल्पसंख्यक के तौर पर अधिसूचित किया गया है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के मुताबिक देश में मुसलमानों की कुल जनसंख्या 17 करोड़ 22 लाख है। जो कि कुल जनसंख्या का 14.02 प्रतिशत है। सच्चर समिति की रिपोर्ट के अनुसार 6–14 वर्ष की आयु समूह के एक चौथाई मुस्लिम बच्चे या तो कभी स्कूल नहीं गए या उन्होंने स्कूल छोड़ दिया। 17 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए मैट्रिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि 26 प्रतिशत है जो कि राष्ट्रीय औसत के मुकाबले 17 प्रतिशत है। केवल 50 प्रतिशत मुस्लिम ही मिडिल स्कूल पूरा करते हैं। रिपोर्ट में मुस्लिम महिलाओं का ग्रामीण क्षेत्रों और तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के बीच शैक्षणिक स्तर निम्न पाया गया है। इस क्षेत्र में कम शोध होने के कारण शोधकत्री को प्रस्तावित अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। देश के विकास के लिए शिक्षा का निर्धारण करना है। अतः देश के भावी कर्णधारों अर्थात बालकों के समुचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए अध्ययन किये जाये। इसी कारण प्रस्तावित अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि अल्पसंख्यक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में अन्तर है या नहीं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
- मिश्रा कल्पना (2016) ने रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन किया। और पाया कि विद्यालय में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन एवं व्यवस्था करने से बालकों के व्यक्तित्व का सार्थक विकास होता हे। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह उनके प्रकृति प्रदत्त गुणों को पहचाने और उन्हें संवारने का कार्य करें।
- परिहार, डा0 मृगेन्द्र सिंह (2018) ने सीधी जिले छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और पाया कि शहरी तथा ग्रामीण छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर होता है।
- उपाध्याय, राम सिंह एवं एल0 इन्द्रमणि (2009) ने निगरानी कार्य पर व्यक्तित्व भेद के प्रभाव को जानने के लिए अध्ययन किया और पाया बर्हिमुखी विद्यार्थियों ने अर्न्तमुखी विद्यार्थियों की तुना में निगरानी कार्य में अच्छा प्रदर्शन किया।

शोध उद्देश्य
1. व्यक्तित्व की सक्रियता और निष्क्रियता के आधार पर अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. व्यक्तित्व के उत्साही एवं शांत स्वभाव के आधार पर अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

3. व्यक्तित्व की मुखरता एवं विनम्रता के आधार पर अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

शोध अवधारणाएं

1. अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सक्रियता एवं निष्क्रियता दानों गुण हैं।
2. अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में उत्साह एवं शांत स्वभाव दोनों ही प्रकार के गुण हैं।
3. अल्पसंख्यक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में मुखरता एवं विनम्रता दोनों गुण हैं।

सीमांकन

प्रस्तावित शोध में केवल बरेली जनपद की बहेड़ी तहसील के कक्षा 10 के 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राएं हैं।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रतिशत विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मापन हेतु डा0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित मानकीकृत व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

- सक्रियता एवं निष्क्रियता के आधार पर विद्यार्थियों का प्रतिशत

तालिका क्रमांक 1

N	M	S.D.	प्रतिशत		
			सक्रियता	औसत	निष्क्रियता
100	15	2.98	29%	39%	32%

सक्रिय विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत से उच्च स्तर	16%
	उच्च स्तर	13%
		29%
औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत	24%
	मध्यम	15%
		39%
निष्क्रिय विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत से उच्च	15%
	मध्यम	6%
	अत्यन्त	11%
		32%

तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त विद्यार्थियों का सक्रियता एवं निष्क्रियता के आधार पर व्यक्तित्व प्राप्तांक मध्यमान क्रमशः 15 है तथा मानक विचलन 2.98 है। सक्रिय विद्यार्थियों का प्रतिशत 29, औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत 39 एवं निष्क्रिय विद्यार्थियों का प्रतिशत 32 है। शोध की पहली अवधारणा के अनुसार 29 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा में सक्रिय रूप से ध्यान देते हैं।

39 प्रतिशत कक्षा में औसत रूप से ध्यान देते हैं तथा 32 प्रतिशत कक्षा में एक समान रहते हैं।

- उत्साही एवं शान्त स्वभाव के आधार पर विद्यार्थियों का प्रतिशत

तालिका क्रमांक 2

N	M	S.D.	प्रतिशत		
			उत्साही	औसत	शांत
100	13.66	3.17	30%	30%	40%

उत्साही विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत$_c$से उच्च	13%
	उच्च स्तर	17%
		30%
औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत	4%
	मध्यम	26%
		30%
निष्क्रिय विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत से उच्च	35%
	मध्यम उच्च	3%
	अत्यन्त उच्च	2%
		40%

तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त विद्यार्थियों का उत्साही एवं शांत स्वभाव के आधार पर व्यक्तित्व प्राप्तांक मध्यमान क्रमशः 13. 66 तथा मानक विचलन 3.17 है। तत्पश्चात उत्साही विद्यार्थियों के प्रतिशत क्रमशः 30 है। औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत 30 है। एवं शांत स्वभाव विद्यार्थियों का प्रतिशत 40 है। इससे कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक संस्थानों के मात्र 30 प्रतिशत विद्यार्थी उत्साही है। अर्थात वे कक्षा के वातावरण तथा अन्य क्रियाकलापों में समय समय पर भाग लेते हैं। 30 प्रतिशत औसत स्तर के हैं। जो न उत्साही हैं एवं न शांत हैं। इसके अतिरिक्त 40 प्रतिशत विद्यार्थी शांत पाये गये इनका कार्य केवल पठन पाठन तक ही सीमित है।

- मुखरता एवं विनम्रता के आधार पर विद्यार्थियों का प्रतिशत

तालिका क्रमांक 3

N	M	S.D.	प्रतिशत		
			मुखरता	औसत	विनम्रता
100	10.48	3.15	30%	37%	33%

मुखर विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत से उच्च	20%
	उच्च स्तर	8%
	अत्यन्त उच्च स्तर	2%
		30%
औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत	20%
	मध्यम	17%
		37%
विनम्र विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत से उच्च	28%
	मध्यम उच्च	2%
	अत्यन्त उच्च	3%
		33%

तालिका से स्पष्ट होता है कि समस्त विद्यार्थियों का मुखरता एवं विनम्रता के आधार पर व्यक्तित्व प्राप्तांक मध्यमान 10.48 तथा मानक विचलन 3.15 है। मुखर विद्यार्थियों का प्रतिशत क्रमशः 30 है। औसत विद्यार्थियों का प्रतिशत 37 है तथा विनम्र विद्यार्थियों का प्रतिशत क्रमशः 33 है। हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक बालक

के परिवार का वातावरण दूसरों से अलग होता है। कुछ बालकों के परिवार में बच्चों को ज्यादा छूट दे दी जाती है। कुछ बालक अपने आप को दूसरे के सामने अधिक दिखावा करना पसंद करते हैं तथा कुछ बालक विनम्र होते हैं वे थोड़े शरमीले तथा संस्कारी होते हैं।

निष्कर्ष

- अल्पसंख्यक संस्थानों के विद्यार्थियों में प्रायः सक्रियता का अभाव है। इसका प्रमुख कारण इन संस्थानों में सामाजिक क्रियाओं की अपेक्षा धार्मिक क्रियाओं पर अधिक जोर दिया जाता है। यहां के छात्र वाहय वातावरण से अप्रभावित रहते हैं।
- अल्पसंख्यक संस्थानों के विद्यार्थियों में उत्साही स्वभाव का अभाव होता है। इस कारण इन संस्थानों में बालकों का पाठ्यक्रम दूसरे संस्थानों की अपेक्षा अधिक सीमित है।
- अल्पसंख्यक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में कम मुखरता का कारण यह है कि वे संख्या में दूसरे संस्थानों की अपेक्षा कम होते हैं। तथा वाह्य वातावरण से दूर रहते हैं। सामाजिक क्रियाकलापों से दूर रहते हैं। तथा आपस में सही से मेल जोल नहीं रख पाते हैं उन पर पारिवारिक ध्यान अधिक नहीं दिया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थः यद्यपि प्रस्तुत शोध कार्य केवल अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों पर किया गया है। परन्तु विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को समझने की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को जानकर एक शिक्षक उन्हें अधिक उपयोगी शिक्षा प्रदान कर सकता है। तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अनुरूप उन्हें समय–समय पर निर्देशन एवं परामर्श भी दिया जा सकता है। साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की जानकारी यदि उनके अभिभावकों को होगी तो वे भी उनकी रूचि के अनुरूप उन्हें उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय की व्यवस्था कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1- गुप्ता एस0पी0 (2008): आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
2- मंगल, एस0के0 एवं मंगल शुभ्रा (2017): व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियां Phi Learning Private Limited, नई दिल्ली।
3- मंगल, एस0के0 (2014): शिक्षा मनोविज्ञान Phi Learning Private Limited, नई दिल्ली।
4- मिश्रा, कल्पना (2016): रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन IJAER, VOL-16) नवम्बर 2016.
5- परिहार, डा0 मृगेन्द्र सिंह (2018): सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन IJHSSR, VOL-4(4) जुलाई 2018.
6- उपाध्याय, राम सिंह एवं एल0 इन्द्रमणि (2009): व्यक्तित्व के प्रकार ....., लघु शोध बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, बनारस।